[2022] 17 एस. सी. आर. 507

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया और अन्य

वी.

अजय कुमार सूद

(2022 की सिविल अपील संख्या 5305)

16 अगस्त, 2022

[डॉ. धनंजय वाई. चंद्रचूड़ और

ए. एस. बोपन्ना, जे. जे.]

निर्णय/आदेशः निर्णयों का लेखन-व्यापक दिशानिर्देशों का महत्व, व्याख्या-आयोजितः निर्णय लेखन एक है

कानून के शासन को बढ़ावा देने और कानून द्वारा शासन पर अंकुश लगाने में महत्वपूर्ण साधन-हालांकि न्यायाधीशों की निर्णय लेखन की अपनी शैली हो सकती है, उन्हें अपनी शैलियों में लेखन में स्पष्टता सुनिश्चित करनी चाहिए न्यायिक लेखन का उद्देश्य पाठक को भ्रमित या भ्रमित नहीं करना है

जटिल भाषा के लिबास के पीछे-न्यायाधीश को कानून के मुद्दों और निर्णय के लिए उत्पन्न होने वाले तथ्यों का एक आसान-से-समझने वाला विश्लेषण प्रदान करने के लिए लिखना चाहिए-निर्णय मुख्य रूप से उन लोगों के लिए होते हैं जिनके मामलों का निर्णय न्यायाधीशों द्वारा किया जाता है-उच्च न्यायालयों और सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय भी भविष्य की पीठों का मार्गदर्शन करने के लिए उदाहरण के रूप में काम करते हैं-निर्णय तर्क की अभिव्यक्ति है, जो आधार प्रदान करता है -

निर्णय निर्माता ने जो दृष्टिकोण अपनाया है, जो संतुलन बनाए गए हैं-कारण एक न्यायाधीश के काम की वैधता के लिए महत्वपूर्ण हैं-वे न्यायिक विश्लेषण में एक अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

नागरिक, शोधकर्ता और पत्रकार कानून के तहत शासन के लिए प्रतिबद्ध सार्वजनिक संस्थानों के रूप में अदालतों के काम का लगातार मूल्यांकन करते हैं-निर्णयों की संरचना के संदर्भ में, अदालतों के लिए उन्हें इस तरह से संरचित करना फायदेमंद होगा कि 'मुद्दा, नियम, अनुप्रयोग और निष्कर्ष' आसानी से पहचाने जा सकें-मामलों के विश्लेषण और संरचना के लिए आमतौर पर प्रसिद्ध 'आई. आर. ए. सी.' विधि का पालन किया जाता है।

प्रस्तुतियों से निर्णयों को भी लाभ हो सकता है जब इसके द्वारा पूरक किया जाता है

तथ्यों और प्रस्तुतियों को दर्ज करना-तथ्यों पर, असंगत और समझ से बाहर होने के कारण विवादित निर्णय को दरकिनार कर दिया जाता है और वापस भेज दिया जाता है-असंगत निर्णयों का हमारे संस्थानों की गरिमा पर गंभीर प्रभाव पड़ता है।

अपील को अनुमति देते हुए, न्यायालय ने

पकड़नाः 1.1 हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय की खंड पीठ का निर्णय समझ से बाहर है। इस न्यायालय में

अपील ने भूलभुलैया के माध्यम से नेविगेट करना मुश्किल पाया

उच्च न्यायालय के निर्णय में समझ से बाहर की भाषा। एक वादी जिसके लिए निर्णय मुख्य रूप से होता है, उसे और भी अधिक कठिन स्थिति में रखा जाएगा। कानून में अप्रशिक्षित, वादी का सामना ऐसी भाषा से किया जाता है जो समकालीन अभिव्यक्ति में सुनी, लिखी या बोली नहीं जाती है। निर्णय में इस तरह की भाषा न्यायिक लेखन के उद्देश्य को विफल कर देती है। अपील में शैली का निर्णय लेखन न्यायिक प्रक्रिया की प्रभावशीलता को कम करता है। न्यायिक लेखन का उद्देश्य जटिल भाषा के लिबास के पीछे पाठक को भ्रमित या भ्रमित करना नहीं है। न्यायाधीश को करना चाहिए

निर्णय के लिए उत्पन्न होने वाले कानून और तथ्य के मुद्दों का एक आसान-से-समझने वाला विश्लेषण प्रदान करने के लिए लिखें। निर्णय मुख्य रूप से उन लोगों के लिए होते हैं जिनके मामलों का निर्णय न्यायाधीशों द्वारा किया जाता है। निर्णय उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय भी भविष्य की पीठों का मार्गदर्शन करने के लिए उदाहरण के रूप में कार्य करते हैं। एक निर्णय उन लोगों के लिए सार्थक होना चाहिए जिनके जीवन और मामले मामले के परिणाम से प्रभावित होते हैं। जबकि एक निर्णय उन लोगों द्वारा भी पढ़ा जाता है जिनके पास कानून में प्रशिक्षण है, वे प्रवचन के पूरे ब्रह्मांड का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। न्यायिक प्रक्रिया में विश्वास पर आधारित है

विश्वास जो इसके लिखित शब्द से उत्पन्न होता है। यदि इसका अर्थ

लिखित शब्द भाषा में खो जाता है, पाठक का विश्वास बनाए रखने की न्यायनिर्णायक की क्षमता गंभीर रूप से कम हो जाती है। [पैरा 10] [517 बी-एफ]

उन कारणों को दर्ज करना जो सभी हितधारकों द्वारा समझे जाते हैं। [पैरा 11] [517-एफ-जी] 1.3 अत्यधिक न्यायिक बोझ के बीच, कभी-कभी एक विचार व्यक्त किया जाता है कि पक्ष परिणाम से चिंतित हैं और कुछ और नहीं। यह दृष्टिकोण इस आधार पर आगे बढ़ता है कि पक्ष परिणाम को महत्व देते हैं न कि उस तर्क को जो

फाउंडेशन। यह दृष्टिकोण न्यायिक कार्य के महत्व और इसके लिए महत्वपूर्ण कारणों को कम महत्व देता है। एक न्यायाधीश के काम को एक मामले के निपटारे के बारे में एक आंकड़े तक सीमित नहीं किया जा सकता है। प्रत्येक निर्णय स्टेट बैंक ऑफ इंडिया और एक अन्य बैंक के समेकन की दिशा में एक वृद्धिशील कदम है।

अजय कुमार

सूड।

और बदल जाता है। पूर्ववर्ती का पालन करते हुए, निर्णय कानूनी सिद्धांत की रक्षा करने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह कानून को निश्चितता प्रदान करता है। इसलिए प्रत्येक निर्णय उन मौलिक उपदेशों के समेकन में एक ईंट है जिन पर एक कानूनी आदेश आधारित है। लेकिन वृद्धिशील चरणों में एक निर्णय मानव अस्तित्व का सामना करने वाले महत्वपूर्ण मुद्दों को संबोधित करके विकसित होने और बदलने की आवश्यकता को संबोधित करता है। न्यायालय सामाजिक परिवर्तन लाने की धीमी लेकिन इतनी मौन प्रक्रिया में उतने ही लगे हुए हैं। उस खोज में वे कितने अच्छे या कम हैं, यह कारणों की गुणवत्ता से परखा जाता है जितना कि न्यायिक प्रक्रिया की संरचना के तरीके से। [पैरा 13] [520-बी-ई]

कानून के तहत शासन के लिए प्रतिबद्ध सार्वजनिक संस्थानों के रूप में न्यायालय। इसलिए निर्णय लेखन कानून के शासन को बढ़ावा देने और कानून द्वारा शासन पर अंकुश लगाने में एक महत्वपूर्ण साधन है। [पैरा 16] [521-एफ-जी; 522-ए-सी] 1.5 निर्णय लेखन एक स्तरित अभ्यास है। एक परत में, एक निर्णय पक्षकारों की चिंताओं और तर्कों को संबोधित करता है

फोरेंसिक प्रतियोगिता। एक अन्य परत में, एक निर्णय हिस्सेदारी [2022] 17 एस. सी. आर. को संबोधित करता है।

संघर्ष से परे धारक। यह समाज में उन लोगों से बात करता है जो प्रवचन से प्रभावित होते हैं। विश्लेषण के स्तरबद्ध सूत्रीकरण में, एक निर्णय वर्तमान और भविष्य की बात करता है। चाहे या किसी निर्णय के लेखक ने इसकी कल्पना नहीं की है, लिखित उत्पाद भविष्य के लिए रहता है, जो सामाजिक संवाद में एक और वृद्धिशील कदम का प्रतिनिधित्व करता है। यदि कोई निर्णय सही नहीं होता है, तो इसकी आलोचना और आलोचना की जा सकती है। तर्क की परतों के पीछे उन मूल्यों पर न्यायनिर्णायक की दृष्टि होती है जिन्हें एक न्यायपूर्ण समाज को अपनाना चाहिए।

मूर्त रूप दें और बचाव करें। संवैधानिक ढांचे में, इन मूल्यों को संविधान में आधारित होना चाहिए। एक न्यायाधीश जो कारण प्रस्तुत करता है, वे एक खिड़की प्रदान करते हैं-न्यायिक कार्य के एक अभिन्न तत्व के रूप में इन मूल्यों का समर्थन करने में न्यायालय के काम में एक अंतर्दृष्टि। [पैरा 17] [522-डी-एफ]

1.6 पैराग्राफ रखना सभी निर्णयों के लिए भी उपयोगी है।

संख्याएँ क्योंकि यह संदर्भ की आसानी के लिए अनुमति देता है और संरचना को बढ़ाता है, निर्णयों की पठनीयता और पहुंच में सुधार करता है। एक लंबे संस्करण में सामग्री की एक तालिका पाठक तक पहुँच में सहायता करती है। [पैरा 20] [523-सी-डी]

1.7 सुलभता को ध्यान में रखते हुए, समाज के सभी वर्गों के व्यक्तियों के लिए निर्णयों को सुलभ बनाने का महत्व,

प्रक्रिया क्योंकि यह दस्तावेजों के साथ-साथ प्रक्रिया को नागरिकों के पूरे सरगम के लिए दुर्गम बनाती है। [पैरा 21] [523-डी-एफ] 1.8 निर्णयों की संरचना के संदर्भ में, न्यायालयों के लिए यह फायदेमंद होगा कि वे उन्हें इस तरह से संरचित करें कि 'मुद्दा,

नियम, अनुप्रयोग और निष्कर्ष आसानी से पहचाने जा सकते हैं। आम तौर पर स्टेट बैंक ऑफ इंडिया और अन्य मामलों के विश्लेषण के लिए प्रसिद्ध 'आई. आर. ए. सी.' विधि का पालन किया जाता है।

अजय कुमार

सूड।

' 'मुद्दा' कानून के उस प्रश्न को संदर्भित करता है जिसका निर्णय अदालत कर रही है। एक अदालत एक ही निर्णय में कई मुद्दों पर विचार कर सकती है। इन मुद्दों की पहचान करना स्पष्ट रूप से निर्णय की संरचना में मदद करता है और पाठक को निर्णय के एक विशेष खंड में तय किए जा रहे कानून के विशिष्ट मुद्दे पर स्पष्टता प्रदान करता है। 'नियम' निर्णय के उस हिस्से को संदर्भित करता है जो प्रस्तुतियों को अलग करता है पहचाने गए मुद्दे के लिए लागू कानून और सिद्धांत पर वकील। यह नियम उस मामले के तथ्यों पर लागू होता है जिसमें मुद्दा उठा है। अदालत के तर्क को दर्ज करने वाला विश्लेषण 'आवेदन' अनुभाग बनाता है। अंत में, न्यायालय के लिए यह हमेशा उपयोगी होता है कि वह विशिष्ट तथ्यों के साथ निर्णय के साथ-साथ मुद्दे पर नियम के अनुप्रयोग के अपने निर्धारण के आधार पर 'निष्कर्ष' को संक्षेप में प्रस्तुत करे और निर्धारित करे। यह हितधारकों, विशेष रूप से बार के सदस्यों के साथ-साथ भविष्य में मामले पर भरोसा करने वाले न्यायाधीशों को संक्षेप में समझने की अनुमति देता है।

मामले की सुनवाई। [पैरा 22-24] [523-G; 524-A-D]

1.10 विवादित फैसले को दरकिनार कर दिया जाता है और इसकी असंगतता के कारण रिमांड पर लिया जाता है। असंगत निर्णय गंभीर होते हैं

हमारे संस्थानों की गरिमा पर प्रभाव। [पैरा 26] [524-एफ-जी] 1.11 जबकि कुछ व्यापक दिशानिर्देश निर्धारित किए गए हैं, व्यक्तिगत न्यायाधीशों के लिखने के तरीके वास्तव में अलग-अलग हो सकते हैं।

निर्णय लेते हैं और उनकी अभिव्यक्ति की शैलियों में भिन्नता बनी रहती है। एक न्यायाधीश की अभिव्यक्ति का एक खुलासा है

मन के विराम। हालाँकि, मन के अंतराल अस्पष्ट हो सकते हैं, लेकिन निर्णय में तर्क नहीं हो सकता है। जबकि न्यायाधीशों की निर्णय लेखन की अपनी शैली हो सकती है, उन्हें इन शैलियों में लेखन में स्पष्टता सुनिश्चित करनी चाहिए। [पैरा 27] [524-जी; 525-ए बी]

हिमाचल प्रदेश राज्य बनाम। हिमाचल एल्यूमीनियम और कंडक्टरों की सिविल अपील संख्या 2022 की 5032; सरला सूद बनाम। पवन कुमार शर्मा अपील करने के लिए विशेष अनुमति (सी) 2017 का सं. 7768-7769; शकुंतला शुक्ला बनाम। उत्तर प्रदेश राज्य (2021) एस. सी. सी. ऑनलाइन एस. सी. 672; शकुंतला [2022] 17 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

शुक्ला बनाम। उत्तर प्रदेश राज्य 2021 आकाशवाणी 4384: [2021]

10 स्केल 298-संदर्भित।

लॉर्ड बरोज, सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश

यूनाइटेड किंगडम, निर्णय-लेखनः एक व्यक्तिगत

न्यायाधीशों का परिप्रेक्ष्य, वार्षिक सम्मेलन

आयरलैंड में उच्च न्यायालय, 20 मई 2021; न्याय डाफ्ने बराक-एरेज़, लेखन कानूनः इस पर विचार

न्यायिक निर्णय और शैक्षणिक छात्रवृत्ति, (2015)

कॉर्बेट, एक निर्णय लिखते हुए-पहले स्थान पर पता नए न्यायाधीशों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम, (1998) 115

दक्षिण अफ्रीकी कानून जर्नल 116; न्याय

माइकल किर्बी, ऑन द राइटिंग ऑफ जजमेंट्स (1990)

न्यूबर्गर, कोई निर्णय नहीं-कोई न्याय नहीं, पहला वार्षिक ब्रिटिश और आयरिश कानूनी सूचना संस्थान (बी. ए. आई. एल. आई. आई.)

व्याख्यान (20 नवंबर 2012)-संदर्भित।

मामला कानून संदर्भ

पै

रा 12

संदर्भित किया गया है

2021 आकाशवाणी 4384

सिविल अपीलीय न्यायनिर्णयः सिविल अपील सं. 5305

2022 तक।

उच्च न्यायालय के 27.11.2020 दिनांकित निर्णय और आदेश से

2020 की रिट याचिका संख्या 3597 में शिमला में हिमाचल प्रदेश सरकार की ओर से।

संजय कपूर, सुश्री सुभ्रा कपूर, सुश्री मेघा कर्णवाल, अर्जुन

भाटिया, आशीष कुमार, सुश्री अक्षता जोशी, अधिवक्ता। अपीलार्थियों के लिए।

कॉलिन गोंजाल्विस, सीनियर एड. , सुश्री राधिका गौतम, सुश्री अंजलि दुबे,

सुश्री हेटवी, अधिवक्ता। उत्तरदाता के लिए।

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था

डॉ. धनंजय वाई. चंद्रचूड़, जे.

1. छुट्टी दे दी गई।

2. यह अपील 27 नवंबर 2020 के एक फैसले से उत्पन्न होती है।

हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय की खंड पीठ। द हाई

न्यायालय ने 09 जुलाई 2019 के केंद्र सरकार औद्योगिक न्यायाधिकरण 1 के आदेश की पुष्टि की।

3. 2013 में, अपीलार्थी ने प्रत्यर्थी को एक आरोप पत्र जारी किया

घोर दुराचार के आरोप पर अनुशासनात्मक जांच में। उत्तरदाता

1 " सी. जी. आई. टी. "स्टेट बैंक ऑफ इंडिया एंड ए. एन. डी. एच. आर. वी. अजय कुमार सूद [डॉ। धनंजय वाई. चंद्रचूड़, जे.]

(i) बैंक की शाखा के कामकाज को बाधित करने और शाखा प्रबंधक के साथ दुर्व्यवहार सहित घोर कदाचार; (ii) अपमानजनक भाषा का उपयोग और शाखा प्रबंधक को धमकी देना; (iii)

बिना पूर्व सूचना के प्रदर्शन आयोजित करना; (iv) अन्य कर्मचारियों को उनके कार्यों को करने से रोककर सुचारू रूप से काम करने में बाधा डालना; (v) शाखा प्रबंधक के अधिकार को कमजोर करने और शाखा के परिचालन जोखिम को बढ़ाने के इरादे से जानबूझकर प्रणालियों और प्रक्रियाओं का उल्लंघन करना; (vi) कर्तव्य से अनधिकृत अनुपस्थिति; (vii) कार्यालय के आदेशों की अवज्ञा; (viii) प्रासंगिक चिकित्सा प्रमाण पत्र प्रदान किए बिना चिकित्सा अवकाश पर आगे बढ़ना; और (ix) बैंक खाते से चेक जारी करना जिसमें पर्याप्त शेष राशि नहीं थी।

जाँच अधिकारी ने 19 अक्टूबर 2013 को एक जाँच रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसमें प्रतिवादी को सभी आरोपों का दोषी पाया गया।

4. अनुशासनात्मक प्राधिकारी ने 22 अक्टूबर 2013 को प्रत्यर्थी को कारण दर्शाएँ नोटिस जारी किया कि जांच अधिकारी के निष्कर्षों को देखते हुए उसे सेवा से क्यों नहीं बर्खास्त किया जाना चाहिए। प्रतिवादी ने 15 दिनों के विस्तार की मांग की। अनुशासनात्मक प्राधिकरण ने नोट किया कि उसने 5 दिनों का विस्तार दिया था, लेकिन कोई प्रतिक्रिया नहीं मिलने पर, उसने 06 के अपने आदेश द्वारा सेवा से बर्खास्तगी का जुर्माना लगाया। नवंबर 2013। बैंक के अपीलीय प्राधिकरण ने 3 जनवरी 2014 को प्रतिवादी की अपील को खारिज कर दिया।

निष्कर्ष कि प्रत्यर्थी के खिलाफ पहला आरोप साबित हो गया था। द. सी. जी. आई. टी. ने बर्खास्तगी के दंड को कठोर और असमान पाया और सजा को अनिवार्य सेवानिवृत्ति में परिवर्तित कर दिया।

7. अपीलार्थी के साथ-साथ प्रत्यर्थी ने हिमाचल प्रदेश के उच्च न्यायालय के समक्ष रिट याचिकाएं दायर कीं ताकि इस आदेश को चुनौती दी जा सके - सी जी आई टी। उच्च न्यायालय ने सी. जी. आई. टी. के आदेश की पुष्टि की। उच्च न्यायालय ने न्यायाधिकरण को प्रतिवादी को प्रदान किए गए परिणामी लाभों की गणना करने का भी निर्देश दिया। उच्च न्यायालय ने न्यायाधिकरण को [2022] 17 एस. सी. आर. का निर्देश दिया।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

धारा 10 (9) और धारा 10 (10) के अनुसार एक आदेश

धूलिया विवाद अधिनियम 1947।

8. 12 मार्च 2021 को इस न्यायालय ने उच्च न्यायालय की खंड पीठ के विवादित आदेश के खिलाफ नोटिस जारी किया।

संविधान के अनुच्छेद 136 के तहत अनुमति याचिका। यह अदालत

वेद

3 प्रथम दृष्टया, हमारे विचार में, दुराचार का एक गंभीर कार्य है। पैराग्राफ में निहित साक्ष्य निष्कर्षों से स्थापित

16 और सी. जी. आई. टी. के पुरस्कार का 17 (अनुलग्नक पी-9)। हम हैं।

27 नवंबर 2020 को उच्च न्यायालय ने याचिका को खारिज कर दिया संविधान के अनुच्छेद 226 के तहत याचिकाकर्ताओं द्वारा दायर, अठारह पृष्ठों से अधिक हैं लेकिन समझ से बाहर हैं। इस उद्देश्य के लिए, के निर्णय के पैराग्राफ 3,4,5 और 6 को निकालना आवश्यक है

उच्च न्यायालय, जो निम्नानुसार पढ़ता हैः

" 3. आक्षेपित पुरस्कार में देखी गई सभी पूर्ववर्ती दुर्बलताएँ,

ऐसा होता है, अनुलग्नक पी-18 में, न तो विवादित रहता है और न ही कोई प्रयास, विद्वान वकील द्वारा किया जाता है, जो नियोक्ता की ओर से उसके सभी कानूनी प्रभावों को समाप्त करने के लिए उपस्थित होता है। नतीजतन, पूर्ववर्ती विपक्ष ने दुर्बलताओं पर ध्यान दिया, जैसा कि आक्षेपित पुरस्कार में प्रतिध्वनित किया गया है, जो अनुलग्नक पी-18 में होती हैं, और सकारात्मक निष्कर्ष (ओं) से संबंधित है, जो श्रमिक के खिलाफ लगाए गए आरोपों के अनुरूप बनाया जा रहा है, अनिवार्य रूप से भारी कानूनी वजन प्राप्त करता है, और यह भी आदेश देता है उनका सम्मान किया जा रहा है।

4. ऐसा हो कि, चूंकि आक्षेपित अधिनिर्णय, विद्वत न्यायाधिकरण के समक्ष दायर याचिका के अनुसरण में, द्वारा किया जाता है

औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 2-ए के तहत कर्मचारी, और जब वह ऐसा करने के बाद, पूर्ण रूप से पर्याप्त होगा।

अवसर, चुनाव लड़ने वाले वादियों को, उन्हें प्रस्तुत करने के लिए

संबंधित साक्ष्य (ओं), उन मुद्दों पर, जो विचार के लिए आते हैं, विद्वान न्यायाधिकरण ने विवादित निर्णय देने के लिए आगे बढ़े,

((i) उस पर अनुलग्नक पी-18 का प्रभाव, यदि कोई हो, या कानूनी प्रभाव, जहां तक कि निष्कर्ष (निष्कर्षों) के समर्थन में साक्ष्य युक्त, उसमें निहित है, दृढ़ता से बन जाता है।

ई बैंक ऑफ इंडिया और एक अन्य बनाम। अजय कुमार डॉड [डॉ। धनंजय वाई. चंद्रचूड़, जे.]

कर्मचारी द्वारा और नियोक्ता द्वारा विद्वत न्यायाधिकरण के समक्ष क्रमशः प्रस्तुत किए गए साक्ष्य के कैनवास के भीतर, और रूपांकनों को शामिल किया गया, (ii) जब तक कि साक्ष्य सामने न आए।

गवाहों के माध्यम से, जिन्होंने विद्वान न्यायाधिकरण के समक्ष गवाही दी, और उनका सामना होने पर

सभी संबंधित गवाहों द्वारा, बल्कि पूरे अवसर के साथ, वकील को, कर्मचारी के लिए, गवाही दी गई, और, नियोक्ता के वकील के लिए, (iv) और यह भी खुलासा करता है कि वकील, नियोक्ता के लिए, प्रक्रिया के दौरान, उनकी प्रतिपरीक्षा के संचालन को छोड़ देता है, इसलिए

जाँच अधिकारी के समक्ष दर्ज उनके पिछले बयान के साथ उनका सामना करें, क्योंकि इसके माध्यम से, उनका स्पष्ट रूप से उनकी संबंधित विश्वसनीयता (आई. एस.) पर महाभियोग लाने का प्रयास है। सुम्मा में,

इसलिए संबंधित न्यायाधिकरण के समक्ष प्रस्तुत साक्ष्य ही, यदि उचित समझा जाए, तो इस न्यायालय द्वारा मूल्यांकन किए जाने का आदेश देता है।

5. विद्वत न्यायाधिकरण के पास, विचार करने पर, साक्ष्य था आरोप संख्या 2,3,4,5,6,7,8 और 9 को जोड़कर, इसलिए निष्कर्ष निकाला गया कि क्या उनका, इसके माध्यम से नहीं, साबित हो रहा है,

बल्कि इसने एक निष्कर्ष निकाला, विज़-ए-विज़, उनकी कमी, की, ठोस

नियोक्ता द्वारा साक्ष्य, या उनका वांछित होना, ठोस साक्ष्य, जो इसके साथ है, और जाहिर है, वापस कर दिया गया है।

उस पर नियोक्ता के लिए प्रतिकूल निष्कर्ष निकालना। नतीजतन, विभाग/नियोक्ता द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का मूल्यांकन, पूर्ववर्ती आरोपों की तुलना में, किसी भी हस्तक्षेप के योग्य नहीं है, क्योंकि इसके पढ़ने से, स्पष्ट रूप से, साक्ष्य के मूल्यांकन का खुलासा होता है, जो कि पूर्व में लगाए गए आरोपों की तुलना में है, इसलिए विद्वान न्यायाधिकरण द्वारा,

विभाग/नियोक्ता द्वारा इसके किसी भी घोर गलत मूल्यांकन से पीड़ित नहीं, और न ही जर्मन साक्ष्य के किसी भी दाग, गैर-मूल्यांकन से पीड़ित, इसलिए इसके साथ प्रस्तुत किया गया।

6. क्रोध का विरोध-विवाद, वादियों को काटता है, निष्कर्षों के लिए, विरोधी, कर्मचारी के लिए, [2022] 17 एस. सी. आर. बन जाता है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

प्रभार संख्या 1 पर लौटाया गया। हालाँकि विद्वान सलाहकार

कर्मचारी की ओर से पेश होते हुए, इस अदालत के समक्ष बहुत जोर से तर्क देता है कि चूंकि सीसीटीवी फुटेज, स्पष्ट रूप से नहीं कहता है, क्या कर्मचारी, उपयुक्त पत्र को फाड़ रहा है,

इसके बाद कर्मचारी के लिए प्रतिकूल निष्कर्ष, आरोप संख्या 1 (ऊपर) पर वापस किए जाने के लिए उत्तरदायी नहीं थे। हालाँकि, इस न्यायालय के समक्ष, श्रमिक के विद्वान वकील द्वारा, पूर्व में प्रस्तुत किया गया समर्पण, उसे ध्यान में रखे बिना किया जाता है, आगे का पहलू, श्रमिक के रूप में, उसके क्रूस में।

परीक्षण, अभिव्यक्ति (ओं) बनाते हुए, वाक्यांश में गढ़ा गया है, "किसी भी शाखा प्रबंधक ने मुझे पहले पत्र जारी करने की हिम्मत नहीं की है।

यह "। इसके अलावा, कर्मचारी के कब्जे में आने के बावजूद, शाखा प्रबंधक द्वारा उसे जारी किया गया उपयुक्त पत्र, विशेष रूप से जब उसके द्वारा कोई सबूत, इसके विपरीत, प्रस्तुत नहीं किया गया था, इसलिए उसे आदेश दिया गया कि वह इस तथ्य को दूर करे कि वह इसे नहीं फाड़ रहा है, बल्कि संबंधित अधिकारी के सामने इसे पेश करना सुनिश्चित करे। हालांकि, वह संबंधित अधिकारी के समक्ष उपरोक्त पत्र को प्रस्तुत करने/पेश करने में विफल रहा, जिसके बाद, सीसीटीवी फुटेज की निंदा करता है, अपने उपयुक्त पत्र को फाड़ते हुए ग्राफिक रूप से प्रदर्शित नहीं करता है, बल्कि किसी भी निष्कर्ष को मजबूत या पूरा नहीं करता है।

प्रभार सं. 1 पर वापस किए जाने के लिए उत्तरदायी।

5 हम यह देखने के लिए विवश हैं कि उच्च न्यायालय के फैसले की भाषा समझ से बाहर है। निर्णयों का उद्देश्य तर्क और विचार की प्रक्रिया को व्यक्त करना है जो निर्णय मंच के अंतिम निष्कर्ष की ओर ले जाता है। लिखने का उद्देश्य

एक निर्णय निर्णय के आधार को न केवल बार के सदस्यों को, जो मामले में उपस्थित होते हैं और अन्य लोगों को, जिनके लिए यह एक उदाहरण के रूप में कार्य करता है, बल्कि सबसे बढ़कर, उन नागरिकों को अर्थ प्रदान करने के लिए है जो कानून के तहत अपने उपायों को आगे बढ़ाने के लिए अदालतों का दरवाजा खटखटाते हैं। उच्च न्यायालय के ऐसे आदेश जो वर्तमान मामले में हैं

नागरिकों के लिए सुलभ और समझने योग्य न्याय सुनिश्चित करने के उद्देश्य की सेवा।

6 चूंकि उच्च न्यायालय ने सी. जी. आई. टी. के निर्णय की पुष्टि की है, इसलिए हम उस आदेश से बुनियादी तथ्यों की समझ पर पहुंचने में सक्षम हुए हैं जिसे उच्च न्यायालय के समक्ष चुनौती दी गई थी। न्यायालय के अभिलेख से, विशेष रूप से सी. जी. आई. टी. के निर्णय से, यह सामने आता है कि यद्यपि कदाचार का एक गंभीर आरोप स्टेट बैंक ऑफ इंडिया और अन्य v.

अजय कुमार सूद [डॉ। धनंजय वाई. चंद्रचूड़, जे.]

प्रत्यर्थी के खिलाफ स्थापित होने के लिए, इसमें हस्तक्षेप किया गया है और उच्च न्यायालय ने अनुच्छेद के तहत याचिका को खारिज कर दिया है 226. "

9. नोटिस की वापसी के बाद, हमने अपीलार्थी के वकील श्री संजय कपूर और अपीलार्थी के वरिष्ठ वकील श्री कॉलिन गोंजाल्विस को सुना है। उत्तरदाता।

10. हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय की खंड पीठ का निर्णय समझ से बाहर है। इस अदालत ने अपील में यह पाया

उच्च न्यायालय के निर्णय में समझ से बाहर भाषा की भूलभुलैया से गुजरना मुश्किल है। एक वादी जिसके लिए निर्णय मुख्य रूप से होता है, उसे और भी अधिक कठिन स्थिति में रखा जाएगा। कानून में अप्रशिक्षित, वादी का सामना ऐसी भाषा से किया जाता है जो समकालीन अभिव्यक्ति में सुनी, लिखी या बोली नहीं जाती है। निर्णय में इस तरह की भाषा न्यायिक लेखन के उद्देश्य को विफल कर देती है। फैसला

अपील में हमारे सामने शैली का लेखन न्यायिक प्रक्रिया की प्रभावशीलता को कम करता है। न्यायिक लेखन का उद्देश्य जटिल भाषा के लिबास के पीछे पाठक को भ्रमित या भ्रमित करना नहीं है। न्यायाधीश ने

निर्णय के लिए उत्पन्न होने वाले कानून और तथ्य के मुद्दों का आसानी से समझने वाला विश्लेषण प्रदान करने के लिए लिखना चाहिए। निर्णय मुख्य रूप से उन लोगों के लिए होते हैं जिनके मामलों का निर्णय न्यायाधीशों द्वारा किया जाता है। उच्च न्यायालयों और सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय भी भविष्य की पीठों का मार्गदर्शन करने के लिए उदाहरण के रूप में काम करते हैं। एक निर्णय उन लोगों के लिए सार्थक होना चाहिए जिनके जीवन और मामले मामले के परिणाम से प्रभावित होते हैं। जबकि एक निर्णय उन लोगों द्वारा भी पढ़ा जाता है जिनके पास कानून में प्रशिक्षण है, वे प्रवचन के पूरे ब्रह्मांड का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। न्यायिक प्रक्रिया में विश्वास है

उस विश्वास पर आधारित है जो इसके लिखित शब्द से उत्पन्न होता है। यदि लिखित शब्द का अर्थ भाषा में खो जाता है, तो न्यायनिर्णायक की पाठक का विश्वास बनाए रखने की क्षमता गंभीर रूप से कम हो जाती है।

इस न्यायालय को कार्यवाही को रिमांड करने के अलावा कोई विकल्प नहीं छोड़ना समझ से बाहर है। उच्च न्यायालय को इसके परिणामस्वरूप हुई देरी और व्यय की सराहना करनी चाहिए और उन कारणों को दर्ज करने का प्रयास करना चाहिए जिन्हें सभी हितधारक समझते हैं। 12. इससे पहले भी हिमाचल प्रदेश राज्य में बनाम. हिमाचल एल्यूमीनियम और कंडक्टर, 2 सरला सूद बनाम। पवन कुमार शर्मा, 3 3

2 2022 की सिविल अपील संख्या 5032, भारत का सर्वोच्च न्यायालय 3 अपील के लिए विशेष अनुमति (सी) 2017 की सं. 7768-7769, भारत का सर्वोच्च न्यायालय [2022] 17 एस. सी. आर.

इस न्यायालय को इसी तरह के निर्णयों से उत्पन्न होने वाली कार्यवाही को रिमांड पर लेना पड़ा

हिमाचल प्रदेश के उच्च न्यायालय से, ताकि आदेशों को ऐसी भाषा में नए सिरे से पारित किया जा सके जो समझने में सक्षम हो। शकुंतला शुक्ला बनाम। उत्तर प्रदेश राज्य में भी, इस न्यायालय की दो न्यायाधीशों की पीठ को इलाहाबाद में उच्च न्यायालय के एक आदेश का सामना करना पड़ा, जिससे वकीलों की दलीलों और अदालत के कारणों के बीच अंतर करना मुश्किल हो गया। निर्णय के उद्देश्य पर जोर देते हुए, इस न्यायालय ने विस्तार से बताया कि निर्णय की सामग्री क्या होनी चाहिए। अदालत ने कहा किः

33. [.....] " निर्णय का अर्थ है एक न्यायिक राय जो मामले की कहानी बताती है; मामला किस बारे में है; अदालत मामले को कैसे हल कर रही है और क्यों। "निर्णय" को अदालत द्वारा किसी प्रश्न या प्रश्न या पक्षकारों के बीच के मुद्दे पर अदालत के समक्ष ठीक से कार्यवाही के लिए दिए गए किसी भी निर्णय के रूप में परिभाषित किया गया है। इसे एक न्यायाधीश के तर्क के साथ एक कानूनी कार्यवाही में अदालत के निर्णय या सजा के रूप में भी परिभाषित किया गया है जो उसे अपने निर्णय की ओर ले जाता है। "निर्णय" शब्द का उपयोग न्यायिक राय या निर्णय के रूप में किया जाता है। रोजलिन एटकिंसन, जे., क्वींसलैंड के सर्वोच्च न्यायालय ने अपने भाषण में एक बार कहा था कि लिखे गए किसी भी निर्णय के चार उद्देश्य होते हैंः

(i) न्यायाधीशों के अपने विचारों को स्पष्ट करना।

(ख) पक्षकारों को अपने निर्णय के बारे में समझाना।

(ग) जनता को निर्णय के कारणों से अवगत कराना।

और

(iv) अपील न्यायालय द्वारा विचार करने के लिए कारण प्रदान करना।

34. यह पर्याप्त नहीं है कि कोई निर्णय सटीक हो, यह आवश्यक है। उचित, तार्किक और आसानी से समझने योग्य भी हो। [.....] अदालत क्या कहती है और वह इसे कैसे कहती है, यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि

अदालत क्या फैसला करती है।

35. प्रत्येक निर्णय में चार मूल तत्व होते हैं और वे हैं (i)

सामग्री (प्रासंगिक) तथ्यों का विवरण, (ii) कानूनी मुद्दे या प्रश्न, (iii) निर्णय पर पहुंचने के लिए विचार-विमर्श और (iv) अनुपात या निर्णायक

निर्णय लें। निर्णय सुसंगत, व्यवस्थित होना चाहिए और

तार्किक रूप से व्यवस्थित। इसे पाठक को पता लगाने में सक्षम बनाना चाहिए। कानूनी सिद्धांतों के आधार पर एक तार्किक निष्कर्ष के लिए तथ्य। निर्णय में महत्वपूर्ण तत्वों की जांच करना उचित है।

4 (2021) एस. सी. सी. ऑनलाइन एस. सी. 672 ए. टी. ई. बैंक ऑफ इंडिया और अन्य बनाम। अजय कुमार सूद [डॉ। धनंजय वाई. चंद्रचूड़, जे.]

निर्णय पढ़ने की कला को पूरी तरह से समझने के लिए। पाथ ऑफ लॉ में, जे. होम्स ने उन असंवेदनशील कारकों पर जोर दिया है जो एक न्यायाधीश को राजी करते हैं। एक निर्णय को तथ्य के निष्कर्ष तैयार करने होते हैं, उसे यह तय करना होता है कि कानून के प्रासंगिक सिद्धांत क्या हैं, और उसे उन कानूनी सिद्धांतों को तथ्यों पर लागू करना होता है। निर्णय के महत्वपूर्ण तत्व इस प्रकार हैं:

(i) शीर्षक (ii) मामला संख्या और उद्धरण

(ग) तथ्य (iv) मुद्दे

v) दोनों पक्षों की दलीलों का सारांश

vi) कानून का अनुप्रयोग vii) अंतिम निर्णायक निर्णय

36. निर्णय न्यायाधीश के व्यक्तित्व की प्रतिकृति है और इसलिए यह अपरिहार्य है कि इसे सावधानी और सावधानी के साथ लिखा जाना चाहिए। निर्णय में तर्क बोधगम्य और तार्किक होना चाहिए। स्पष्टता और सटीकता लक्ष्य होना चाहिए। सभी निष्कर्षों को विधिवत दर्ज किए गए कारणों द्वारा समर्थित किया जाना चाहिए। निष्कर्ष और निर्देश सटीक और विशिष्ट होने चाहिए। निर्णय लिखना एक कला है, हालांकि इसमें कानून और तर्क का कुशल अनुप्रयोग शामिल है। हम इस तथ्य से अवगत हैं कि न्यायाधीशों पर लंबित मामलों और बकाया राशि का बोझ हो सकता है, लेकिन साथ ही, मात्रा के लिए गुणवत्ता का कभी भी त्याग नहीं किया जा सकता है। जब तक निर्णय सटीक तरीके से नहीं होता, तब तक इसका व्यापक प्रभाव नहीं पड़ेगा। कुछ निर्णय हैं जो अंततः स्पष्टता की कमी के कारण खारिज हो जाते हैं। इसलिए, जब भी कोई निर्णय लिखा जाता है, तो उसमें तथ्यों पर स्पष्टता होनी चाहिए; प्रतिद्वंद्वी पक्षों की ओर से की गई प्रस्तुतियों पर; कानूनी बिंदुओं पर चर्चा और उसके बाद तर्क और उसके बाद अंतिम निष्कर्ष और निष्कर्ष और उसके बाद आदेश का परिचालन भाग। दी गई अंतिम राहत पर स्पष्टता होनी चाहिए। मुकदमे के एक पक्ष को यह पता होना चाहिए कि अंतिम राहत के रूप में उसे वास्तव में क्या मिला है। निर्णय लिखते समय उपरोक्त पहलुओं को ध्यान में रखा जाना चाहिए, जिससे अपीलीय न्यायालय का बोझ भी कम होगा। हमें ऐसे कई निर्णय मिले हैं जिन पर स्पष्टता का अभाव है।

तथ्य, तर्क और निष्कर्ष और कई बार यह बहुत कठिन होता है [2022] 17 एस. सी. आर.

इस बात की सराहना करने के लिए कि विद्वान न्यायाधीश क्या व्यक्त करना चाहते हैं

निर्णय और उसके कारण, मामलों को रिमांड पर लेने की आवश्यकता होती है

नए विचार के लिए। अतः यह वांछनीय है कि निर्णय

तथ्यों और कानून दोनों पर और प्रस्तुतियों पर स्पष्टता होनी चाहिए,

निष्कर्ष, तर्क और अंतिम राहत प्रदान की गई।

(जोर दिया गया)

13. अत्यधिक न्यायिक बोझ के बीच, कभी-कभी एक दृष्टिकोण होता है

उन्होंने कहा कि पार्टियां परिणाम से चिंतित हैं और कुछ और नहीं। यह दृष्टिकोण इस आधार पर आगे बढ़ता है कि पक्ष परिणाम को महत्व देते हैं न कि उस तर्क को जो आधार का गठन करता है। यह दृष्टिकोण न्यायिक कार्य के महत्व और इसके लिए महत्वपूर्ण कारणों को कम महत्व देता है। एक न्यायाधीश के काम को एक आँकड़ा तक सीमित नहीं किया जा सकता है एक मामले का निपटान। प्रत्येक निर्णय समेकन और परिवर्तन की दिशा में एक वृद्धिशील कदम है। पूर्ववर्ती का पालन करते हुए, निर्णय कानूनी सिद्धांत की रक्षा करने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह कानून को निश्चितता प्रदान करता है। इसलिए प्रत्येक निर्णय उन मौलिक उपदेशों के समेकन में एक ईंट है जिन पर एक कानूनी आदेश आधारित है। लेकिन वृद्धिशील चरणों में ए

निर्णय मानव अस्तित्व का सामना करने वाले महत्वपूर्ण मुद्दों को संबोधित करके विकसित होने और बदलने की आवश्यकता को संबोधित करता है। अदालतें उतनी ही हैं

एक सामाजिक परिवर्तन लाने की धीमी लेकिन इतनी मौन प्रक्रिया में लगे हुए हैं। उस खोज में वे कितने अच्छे या कम हैं, यह कारणों की गुणवत्ता से परखा जाता है जितना कि न्यायिक प्रक्रिया की संरचना के तरीके से।

14. यूनाइटेड किंगडम के सर्वोच्च न्यायालय के लॉर्ड बरोज,

आयरलैंड में उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों के वार्षिक सम्मेलन में अपने भाषण में स्पष्टता, सुसंगतता और समन्वय के महत्व पर जोर दिया। निर्णय लेखन में संक्षिप्तता। 5 लॉर्ड बरोज ने निर्णय को इस तरह से लिखे जाने के महत्व पर भी ध्यान दिया कि यह अपने व्यापक और विविध संभावित दर्शकों को देखते हुए सभी के लिए सुलभ हो। उन्होंने नोट कियाः 6

वरिष्ठ न्यायाधीशों के लिए, किसी के लक्षित दर्शकों में पार्टियों को शामिल करना चाहिए

स्वयं, उन पक्षों के कानूनी सलाहकार, अन्य न्यायाधीश, अन्य

वकीलों, अकादमिक वकीलों और छात्रों का अभ्यास करना, और अंतिम लेकिन

किसी भी तरह से कम से कम आम जनता के लिए तो नहीं।

5 लॉर्ड बरोज, यूनाइटेड किंगडम के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश, निर्णय लेखनः एक व्यक्तिगत परिप्रेक्ष्य, आयरलैंड में उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों का वार्षिक सम्मेलन, 20 मई 2021

" आई. बी. आई. डी. स्टेट बैंक ऑफ इंडिया और ए. एन. डी. एच. आर. बनाम अजय कुमार सूद [डॉ। धनंजय वाई. चंद्रचूड़, जे.]

लॉर्ड बरोज भी लॉर्ड बिंघम के दृष्टिकोण को दोहराते हैं, कि एक निर्णय जो अस्पष्ट है या संक्षिप्त नहीं है और इसलिए पहुंच से बाहर है।

कानून के शासन का विरोध कर सकता हैः 7

(टी) यहाँ यह विचार है कि एक निर्णय जो अस्पष्ट है या संक्षिप्त नहीं है और इसलिए पहुंच से बाहर है, कानून के शासन का खंडन कर सकता है। महान लॉर्ड बिंघम-न्याय के एक मास्टर-लेखन यदि कभी एक था-ने अपनी पुस्तक, द रूल ऑफ लॉ में इसका सुझाव दिया। कानून के शासन के अपने पहले ठोस तत्व के रूप में निर्धारित करने के बाद कि

' कानून सुलभ होना चाहिए 'उन्होंने आगे कहाः

' न्यायाधीश कानून की अस्पष्टता और जटिलता की आलोचना करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। लेकिन जो लोग कांच के घरों में रहते हैं, उन्हें पत्थर फेंकने की सलाह दी जाती है। कुछ सामान्य विधि निर्णयों की लंबाई, विस्तार और उत्कृष्टता अपने आप में कानून को कुछ हद तक दुर्गम बनाने का प्रभाव डाल सकती है।

15. अकादमिक लेखन के एक अंश में, इज़राइल के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति डाफ्ने बराक-एरेज़ ने अकादमिक लेखन के बीच अंतर किया

और निर्णय लेखन। निर्णयों को सुलभ तरीके से लिखे जाने के महत्व की ओर इशारा करते हुए, 8 न्यायमूर्ति डाफ्ने बराक-एरेज़ टिप्पणी करते हैं:

न्यायाधीशों के लिए, पेशेवर समुदाय उनके कई दर्शकों में से केवल एक है। न्यायाधीश सबसे पहले उपस्थित होने वाले पक्षों के लिए लिखते हैं

उनके सामने, राज्य के एजेंटों के लिए जो प्रभारी हैं

प्रवर्तन, और जनता के लिए। हालाँकि निर्णय हैं

पेशेवर कानूनी दस्तावेज, और कभी-कभी जटिल तकनीकी और कानूनी विश्लेषण शामिल होते हैं, वे उन लोगों के लिए सुलभ भी होने चाहिए, या कम से कम स्पष्ट रूप से, जो पेशेवर नहीं हैं, क्योंकि वे एक बड़े समुदाय के लिए कानून को परिभाषित करते हैं।

16. एक निर्णय एक निष्कर्ष में समाप्त होता है। लेकिन इसकी सामग्री निष्कर्ष के आधार का प्रतिनिधित्व करती है। एक निर्णय इसलिए एक है

कारण की अभिव्यक्ति। कारण उस दृष्टिकोण का आधार प्रदान करते हैं जिसका निर्णय निर्माता ने समर्थन किया है, जो संतुलन बनाए गए हैं। यही कारण है कि न्यायाधीश के काम की वैधता के लिए कारण महत्वपूर्ण हैं।

वे न्यायिक विश्लेषण में एक अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं, पाठक को समझाते हैं कि जो लिखा गया है वह क्यों लिखा गया है। कारण, अंतिम निष्कर्ष तक, जांच के लिए खुले हैं। एक निर्णय मुख्य रूप से इसके लिए लिखा जाता है

7 1 इबिद 8 न्यायमूर्ति डाफ्ने बराक-एरेज़, लेखन कानूनः न्यायिक निर्णयों और शैक्षणिक छात्रवृत्ति पर विचार, (2015) रानी का कानून जर्नल 255 [2022] 17 एस. सी. आर.

फोरेंसिक प्रतियोगिता में पार्टियाँ। जाँच सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण उस व्यक्ति द्वारा की जाती है जिसके लिए निर्णय लिया जाता है-अदालत के समक्ष परस्पर विरोधी पक्ष। माध्यमिक स्तर पर, कारण एक उच्च मंच में न्यायिक परिणाम को चुनौती देने का आधार प्रदान करते हैं। निर्णय की वैधता का परीक्षण अंतर्निहित सामग्री और कारणों से किया जाता है। लेकिन और भी है। समान रूप से

महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि एक निर्णय वर्तमान और भविष्य की बात करता है। एकल रूप से या संयोजन में लिए गए न्यायिक परिणामों में मानव जीवन पर प्रभाव। इसलिए, एक निर्णय व्यापक आलोचना और जांच के लिए उत्तरदायी है, जो एक अदालत में तत्काल प्रतिस्पर्धा से परे है। नागरिक, शोधकर्ता और पत्रकार लगातार अदालतों के काम का मूल्यांकन करते हैं

कानून के तहत शासन के लिए प्रतिबद्ध सार्वजनिक संस्थान। इसलिए निर्णय लेखन कानून के शासन को बढ़ावा देने और कानून द्वारा शासन पर अंकुश लगाने में एक महत्वपूर्ण साधन है।

17. निर्णय लेखन एक स्तरित अभ्यास है। एक परत में, एक निर्णय एक फोरेंसिक प्रतियोगिता के लिए पक्षों की चिंताओं और तर्कों को संबोधित करता है।

एक अन्य परत में, एक निर्णय हितधारकों को संघर्ष से परे संबोधित करता है। यह समाज में उन लोगों से बात करता है जो प्रवचन से प्रभावित होते हैं। विश्लेषण के स्तरबद्ध सूत्रीकरण में, एक निर्णय वर्तमान और भविष्य की बात करता है। चाहे किसी निर्णय के लेखक ने इसकी कल्पना की हो या नहीं, लिखित उत्पाद भविष्य के लिए रहता है, जो सामाजिक संवाद में एक और वृद्धिशील कदम का प्रतिनिधित्व करता है। यदि कोई निर्णय सही नहीं होता है, तो इसकी आलोचना और आलोचना की जा सकती है। तर्क की परतों के पीछे उन मूल्यों पर न्यायनिर्णायक की दृष्टि होती है जिन्हें एक न्यायपूर्ण समाज को मूर्त रूप देना चाहिए और उनकी रक्षा करनी चाहिए। संवैधानिक ढांचे में, इन मूल्यों को संविधान में आधारित होना चाहिए। एक न्यायाधीश जो कारण प्रस्तुत करता है, वे एक खिड़की प्रदान करते हैं-न्यायिक कार्य के एक अभिन्न तत्व के रूप में इन मूल्यों का समर्थन करने में न्यायालय के काम में एक अंतर्दृष्टि।

18. कई निर्णय कानून और तथ्य के जटिल प्रश्नों का निर्णय करते हैं। संक्षिप्तता एक अत्यधिक बोझ वाली न्यायपालिका का अनजाने में शिकार है। यह है।

सॉफ्टवेयर डेवलपर्स द्वारा प्रदान की गई कट-कॉपी-पेस्ट सुविधा का भी शिकार बनना। यह न्यायालय एक संरचित अनुक्रम प्रदान करने में पाठक की सहायता के लिए शीर्षक और उपशीर्षक प्रदान करता रहा है। लॉर्ड डेनिंग द्वारा निर्णय लेखन में प्रस्तुत और लोकप्रिय, इस विकास को सभी क्षेत्राधिकारों में दोहराया गया है। 9.

सुप्रा (लॉर्ड बरोज)

19. यूनाइटेड किंगडम के सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व राष्ट्रपति लॉर्ड न्यूबर्गर ने एक व्याख्यान 1 के दौरान चर्चा की स्पष्ट रूप से लिखित निर्णयों का महत्वः

विचार करने योग्य दूसरा छोटा सा बदलाव यह होगा कि अधिक न्यायाधीश अपने लंबे निर्णयों की संरचना और सामग्री के लिए बेहतर मार्गदर्शन दें। कुछ न्यायाधीश पहले से ही एक स्पष्ट रूपरेखा प्रदान करते हैं,

कभी-कभी विषय-वस्तु की एक तालिका के साथ, शुरुआत में एक रोडमैप, और अक्सर पूरे निर्णय के दौरान उपयुक्त शीर्षक, साइनपोस्ट के साथ। किम्बले का अध्ययन इस बात की पुष्टि करता है कि यह केवल एक अच्छी बात नहीं है। अनुशासन लेकिन कानूनी पेशेवर पाठक यही चाहते हैं, और अगर वकील यही चाहते हैं, तो गैर-वकील यही चाहेंगे।

एक स्पष्ट संरचना सुलभता में सहायता करती है। 20. पैराग्राफ संख्या रखना सभी निर्णयों के लिए भी उपयोगी है।

क्योंकि यह संदर्भ की आसानी की अनुमति देता है और संरचना को बढ़ाता है, निर्णयों की पठनीयता और पहुंच में सुधार करता है। एक लंबे संस्करण में सामग्री की एक तालिका पाठक तक पहुँच में सहायता करती है।

21. सुलभता के संदर्भ में, समाज के सभी वर्गों के व्यक्तियों, विशेष रूप से व्यक्तियों के लिए निर्णयों को सुलभ बनाने का महत्व।

अक्षमता पर जोर देने की आवश्यकता है। सभी न्यायिक संस्थानों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके द्वारा प्रकाशित किए जा रहे निर्णयों और आदेशों में अनुचित रूप से रखे गए वाटरमार्क न हों क्योंकि वे अंत में उन दृश्य विकलांग व्यक्तियों के लिए दस्तावेजों को दुर्गम बना देते हैं जो उन्हें प्राप्त करने के लिए स्क्रीन रीडर का उपयोग करते हैं। उसी नोट पर, अदालतों और न्यायाधिकरणों को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि अपलोड किए गए निर्णयों और आदेशों का संस्करण डिजिटल हस्ताक्षर का उपयोग करके सुलभ और हस्ताक्षरित हो। वे मुद्रित प्रतियों के स्कैन किए गए संस्करण नहीं होने चाहिए। दस्तावेजों को छापने और स्कैन करने का अभ्यास एक व्यर्थ और समय लेने वाली प्रक्रिया है जो किसी भी उद्देश्य की पूर्ति नहीं करती है। इस प्रथा को मुकदमे की प्रक्रिया से समाप्त कर दिया जाना चाहिए क्योंकि यह करता है

दस्तावेजों के साथ-साथ प्रक्रिया नागरिकों के एक पूरे सरगम के लिए दुर्गम है। 22. निर्णयों की संरचना के संदर्भ में, अदालतों के लिए उन्हें इस तरह से संरचित करना फायदेमंद होगा कि 'मुद्दा, नियम, अनुप्रयोग और निष्कर्ष' आसानी से पहचाने जा सकें। प्रसिद्ध 'आई. आर. ए. सी'

आम तौर पर मामलों के विश्लेषण और प्रस्तुतियों की संरचना के लिए अपनाई जाने वाली विधि भी निर्णयों को लाभान्वित कर सकती है जब इसे तथ्यों और प्रस्तुतियों को दर्ज करके पूरक किया जाता है। 10 लॉर्ड न्यूबर्गर, नो जजमेंट-नो जस्टिस, पहला वार्षिक ब्रिटिश और आयरिश कानूनी सूचना संस्थान (बी. ए. आई. एल. आई. आई.) व्याख्यान (20 नवंबर 2012)

2] 17 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

23. 'मुद्दा' कानून के उस प्रश्न को संदर्भित करता है जिसका निर्णय अदालत कर रही है। एक अदालत एक ही मामले में कई मुद्दों से निपट सकती है।

निर्णय। इन मुद्दों की पहचान करने से स्पष्ट रूप से निर्णय की संरचना में मदद मिलती है और पाठक को कानून के विशिष्ट मुद्दे पर स्पष्टता मिलती है।

निर्णय के एक विशेष खंड में निर्णय लिया गया। 'नियम' निर्णय के उस हिस्से को संदर्भित करता है जो इस पर वकील की प्रस्तुतियों को अलग करता है

पहचान किए गए मुद्दे के लिए लागू कानून और सिद्धांत। यह नियम उस मामले के तथ्यों पर लागू होता है जिसमें मुद्दा उठा है। अदालत के तर्क को दर्ज करने वाला विश्लेषण 'आवेदन' अनुभाग बनाता है। 24. अंत में, एक अदालत के लिए यह हमेशा उपयोगी होता है कि वह आवेदन के अपने निर्धारण के आधार पर 'निष्कर्ष' को संक्षेप में प्रस्तुत करे और निर्धारित करे -

विशिष्ट तथ्यों के संबंध में निर्णय के साथ मुद्दे का नियम। यह हितधारकों, विशेष रूप से बार के सदस्यों के साथ-साथ भविष्य में मामले पर भरोसा करने वाले न्यायाधीशों को मामले के संचालन को संक्षिप्त रूप से समझने की अनुमति देता है।

25. न्यायमूर्ति एम. एम. कॉर्बेट, सुप्रीम कोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश

दक्षिण अफ्रीका का न्यायालय, नए के लिए एक अभिविन्यास पाठ्यक्रम में एक व्याख्यान में

न्यायाधीशों, 1 1 ने एक समान संरचना की सिफारिश की जो व्यवस्था को सुविधाजनक बनाती है और एक तार्किक, प्रवाहित निर्णय देती हैः

(क) एक परिचयात्मक खंड;
(ख) तथ्यों को निर्धारित करनाः

((ग) कानून और मुद्दे;

(ई) राहत का निर्धारण (लागत के लिए आदेश सहित); और
(च) अंत में, न्यायालय का आदेश।

26. हालाँकि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हमें विवादित फैसले को दरकिनार करना पड़ा और इसकी असंगतता के कारण इसकी रिमांड का निर्देश देना पड़ा, हमने लिया है

निर्णय लेखन पर उपरोक्त चर्चा को प्रस्तुत करने का अवसर।

असंगत निर्णयों का हमारी गरिमा पर गंभीर प्रभाव पड़ता है। संस्थाएं।

27. जबकि हमने कुछ व्यापक दिशानिर्देश निर्धारित किए हैं, व्यक्तिगत न्यायाधीशों के पास वास्तव में निर्णय लिखने के अलग-अलग तरीके हो सकते हैं और उनकी अभिव्यक्ति की शैलियों में भिन्नता बनी रह सकती है। एक न्यायाधीश की अभिव्यक्ति

1 न्यायमूर्ति एम. एम. कॉर्बेट, एक निर्णय लेखन-नए न्यायाधीशों के लिए प्रथम अभिविन्यास पाठ्यक्रम में संबोधन, (1998) 115 दक्षिण अफ्रीकी कानून जर्नल 116 स्टेट बैंक ऑफ इंडिया और अन्य बनाम।

अजय कुमार सूद [डॉ। धनंजय वाई. चंद्रचूड़, जे.]

यह मन की रिक्तताओं का खुलासा है। हालाँकि, मन के अंतराल अस्पष्ट हो सकते हैं, लेकिन निर्णय में तर्क नहीं हो सकता है। जबकि न्यायाधीशों की निर्णय लेखन की अपनी शैली हो सकती है, उन्हें इन शैलियों में लेखन में स्पष्टता सुनिश्चित करनी चाहिए। न्यायमूर्ति कॉर्बेट ने निम्नलिखित उद्धरण में यह भी दर्ज किया है:

स्पष्टता के लिए किसी भी निर्णय का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए-लेखक। में।

उसी समय, शैली के कुछ पहलुओं का स्पष्टता पर असर पड़ता है।

इस संबंध में, मेरी सलाह (इसके लायक होने के लिए) यह है कि

आपकी भाषा और आपकी वाक्य रचना सरल है। लिखें।

छोटे वाक्यों में और बहुत सारे विचारों को पैक करने की कोशिश न करें

एक वाक्य में। विशेष रूप से तथ्यों को निर्धारित करने में, कोशिश करें

अपनी कथा में एक सरल, सीधा प्रवाह बनाए रखने के लिए। शब्दों या वाक्यांशों की पुनरावृत्ति से बचने की कोशिश करें और ध्यान रखें

व्याकरण के सामान्य नियम। सरलता का एक प्रसिद्ध प्रतिपादक

भाषा और सरल वाक्य लॉर्ड डेनिंग था।

(जोर दिया गया)

28. इसी तरह की भावना व्यक्त करते हुए न्यायमूर्ति माइकल किर्बी ने कहा,

ऑस्ट्रेलिया के उच्च न्यायालय के प्रतिष्ठित पूर्व न्यायाधीश टिप्पणी करते हैं: 13

संक्षिप्तता, सरलता और स्पष्टता। ये अच्छाई की पहचान हैं।

निर्णय लेखन। लेकिन इनमें से सबसे बड़ी स्पष्टता है।

29. विवादित निर्णय की समझ से बाहर होने को देखते हुए,

हम अपील को स्वीकार करते हैं और 2020 के 4844 के साथ 2020 के सी. डब्ल्यू. पी. संख्या 3597 में 27 नवंबर 2020 के हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के फैसले को रद्द कर देते हैं।

30. 2020 की सी. डब्ल्यू. पी. संख्या 3597 और 2020 की 4844 को बहाल किया गया है।

प्रत्यर्थी के वकील का अनुरोध है कि गुण-दोष पर पक्षकारों के सभी अधिकारों और तर्कों को खुला रखा जाए।
12 आई. बी. आई. डी. 13 न्यायमूर्ति माइकल किर्बी, निर्णयों के लेखन पर, (1990) 64 ऑस्ट्रेलियाई कानून जर्नल 691 526

31. यह देखते हुए कि रिट याचिकाएं 2020 में दायर की गई थीं और

ए.

सेवा की समाप्ति वर्ष 2013 की है, हम उच्च न्यायालय से रिट याचिकाओं के निपटारे में तेजी लाने का अनुरोध करेंगे।

32. लंबित आवेदन, यदि कोई हों, का निपटारा कर दिया जाता है।

निधि जैन और अनुराग भास्कर (प्रियांशु अग्रवाल, एलसीआरए द्वारा सहायता प्राप्त)